कैम्पस कनेक्ट
(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)
अप्रैल, 2026 वर्ष : 1, अंक : 9

प्रेरणा–स्रोत :
श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल
:campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट :www.suksn.edu.in

(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

मत्तासुख परिच्चागा पस्से च विपुलं सुखं।
चजे मत्तासुखं धीरो सम्पस्सं विपुलं सुखं।।

'धम्मपद' में भगवान बुद्ध कहते हैं– 'अल्प सुख के परित्याग से यदि अधिक सुख देखे, तो धीरवान पुरुष विपुल सुख को देखते हुए अल्प सुख का परित्याग कर दे।'

अप्रैल महीने में हमारे विद्यार्थी अपनी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। बहुत शीघ्र ही उनकी परीक्षाएं आरम्भ होंगी। परीक्षा एक ऐसा कार्य है, जो हमें थोड़ा या बहुत नर्वस करता ही है। कष्ट भी यह देता ही है, क्योंकि इसकी तैयारी के लिये मेहनत करनी पड़ती है। कुछ विद्यार्थी तो सारी मेहनत इसी समय करते हैं। खास तौर से उसे यह 'परीक्षा' नामक शब्द अधिक परेशान करता है, जिसकी तैयारी अच्छी नहीं होती। तैयारी परिश्रम माँगती है और परिश्रम हमारा सुख–चैन छीनता है। पर यह अल्पकालिक होता है। वास्तविक सुख से तो हमारा साक्षात्कार भी हमारा परिश्रम ही कराता है। जितना अच्छा हम परिश्रम करेंगे, जितनी अच्छी तैयारी होगी, उतना ही अच्छा परिणाम हमें प्राप्त होगा और अच्छा परिणाम हमारे सुख का आधार बनता है। सच कहा जाये तो परिश्रम का भी अपना अलग ही आनन्द है। अपने परिश्रम के बूते जब हम कोई चीज प्राप्त करते हैं तो उसका सुख कुछ अलग ही होता है।

तो प्रश्न वहीं आ जाता है कि हमें तात्कालिक सुख चाहिए कि दीर्घकालिक। अल्प सुख चाहिए कि विपुल। स्पष्टतया हर कोई उत्तर में कहेगा कि दीर्घकालिक, विपुल सुख। तो यदि दीर्घकालिक और विपुल सुख की कामना है, तब हमें तात्कालिक या अल्पकालिक सुख का परित्याग करना ही पड़ेगा। उद्यम का वृक्ष बड़े परिश्रम से तैयार होता है, पर उससे जो फल प्राप्त होता है, वह बड़ा आनन्ददाई होता है। यही भगवान बुद्ध कहते हैं। किसी भी क्षेत्र में हम काम कर रहे हों और चाहे किसी भी समय तथा किसी भी परिस्थिति में हों, यह नियम तो लागू होगा ही।

सत्र भर की गयी पढ़ायी की परीक्षा के साथ ही परीक्षाकाल में हमारी अपनी परीक्षा भी होती है कि हम मानसिक रूप से कितने मजबूत हैं। मतलब कि कोई भी बाहरी परीक्षा हमारी अपनी आन्तरिक परीक्षा भी होती है। और यह आन्तरिक परीक्षा बाह्य परीक्षा का परिणाम तय करने में अपनी बड़ी भूमिका निभाती है। यह परीक्षा होती है हमारे अपने गहन विश्वास की, संकल्प की दृढ़ता की, उसे साधने हेतु अटूट लगन की, अथक परिश्रम की, अशेष समर्पण की। बाहर की जीत हमारे अन्तर की जीत पर निर्भर करती है। आज के दौर में प्रतियोगिता बड़ी है। तो आवश्यक यह भी है कि हम बाहर जय पाने के लिये पहले अपने भीतर विजय प्राप्त करें। इसके लिये करना क्या है? अपने भीतर के भरोसे को जगाये रखना है। भरोसा हमारी अच्छी तैयारी से जगता है, सो हमें अपनी तैयारी अच्छी करनी है।

महापुरुषों की बातें हमारा मनोबल बढ़ाती हैं, हमें मार्ग दिखाती हैं, जीवन की सीख देती हैं। उनकी वाणी अनुभव–प्रसूत और सिद्ध होती है, जिसकी अनुपालना से हमारा पथ प्रशस्त होता है। निश्चय ही यह हमारे विद्यार्थियों के लिये कठिन परिश्रम का समय है। पूरी लगन, समर्पण और तत्परता के साथ अपने लक्ष्य को साधने का समय है। वे पूरे मनोयोग के साथ अपनी लक्ष्य–साधना में लगे होंगे, ऐसा हमें विश्वास है। हम अपने विश्वविद्यालय परिवार के सभी विद्यार्थियों के लिये बहुत–बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। आप सब अच्छी तैयारी के साथ अपनी परीक्षाएं दें और हर परीक्षा के साथ मुस्कराते हुए, हँसते–खिलखिलाते हुए बाहर निकलें। अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये तो यह शुभभावना भी है कि वे विश्वविद्यालयी परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के उपरान्त जीवन की भी हर परीक्षा को इसी तरह से लें और कुशलतापूर्वक उसमें सफलता प्राप्त करें।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परमविद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा,महाकरुणा,शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

(शब्द–रचना : अनन्त मिश्र)

वीणावादिनि वर दे!

वर दे! वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृतमन्त्र नव,
भारत में भर दे!
काट अन्ध उर के बन्धन–स्तर,
वहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर–
जगमग जग कर दे!
नव गति, नव लय, ताल–छन्द नव,
नवल कण्ठ, नव नवल मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग–वृन्द को–
नव पर नव स्वर दे!

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर,
नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर,
मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे,
शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए,
समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल,
बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकरातीं अनन्त की,
पाकर जहाँ किनारा।।
हेम कुम्भ ले उषा सवेरे,
भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब,
जगकर रजनी भर तारा।।

(जयशंकर प्रसाद)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में कला संकाय भवन के विस्तारीकरण हेतु भूमि–पूजन एवं शिलान्यास संपन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में कला संकाय भवन के विस्तारीकरण के लिए 11 मार्च, 2026 को विधि–विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भूमि पूजन एवं शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने

पूजन–अनुष्ठान कर निर्माण कार्य का औपचारिक शुभारम्भ किया। प्रस्तावित विस्तारित भवन दो मंजिला होगा, जिसमें आधुनिक सुविधाओं से युक्त कुल आठ स्मार्ट लेक्चर कक्ष (चार भूतल तथा चार प्रथम तल पर) बनाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त भवन में अग्निशमन, जल आपूर्ति तथा स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित शौचालय सहित अन्य आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की भी समुचित व्यवस्था की जाएगी।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि कला संकाय भवन का यह विस्तारीकरण विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आधुनिक स्मार्ट लेक्चर कक्षों और उन्नत अधोसंरचना के माध्यम से विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षण वातावरण प्राप्त होगा, जिससे उनके अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और तकनीक–सम्मत बनेगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शैक्षणिक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

कार्यवाहक कुलसचिव दीनानाथ यादव ने कहा कि नए विस्तारित भवन के निर्माण से कला संकाय की

शैक्षणिक गतिविधियों को और अधिक गति मिलेगी। आधुनिक सुविधाओं से युक्त यह भवन विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिएअत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा तथा विश्वविद्यालय के समग्र शैक्षणिक वातावरण को सुदृढ़ करेगा।

इस अवसर पर कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव, वाणिज्य संख्या के अधिष्ठाता प्रोफेसर सौरभ, विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय, पूर्व अधिष्ठाता प्रो. हरीशकुमार शर्मा, हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ. विशाल गुप्ता, सम्पत्ति अधिकारी डॉ. विमल वर्मा, डॉ संतोष सिंह, डॉ रविकांत शुक्ला, डॉ हृदयकांत पांडेय डॉ. जय सिंह यादव, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सहित निर्माण कार्य से जुड़े अभियंता, विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

'हमारा संविधान : भाव और रेखांकन' विषय पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में व्याख्यान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विधि विभाग की ओर से "हमारा संविधान : भाव और रेखांकन" विषय पर 16 मार्च को एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें समाज–चिंतक, प्रखर राष्ट्रवादी विचारक, लेखक–कवि एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आजीवन प्रचारक लक्ष्मीनारायण भाला महाराष्ट्र से मुख्य वक्ता रहे। अपने शोधपरक एवं तथ्यपूर्ण व्याख्यान में उन्होंने भारतीय संविधान की मूल हस्तलिखित प्रति में निहित सांस्कृतिक–ऐतिहासिक चित्रों के भाव, प्रतीकात्मकता तथा उनके राष्ट्रीय महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

मुख्य वक्ता लक्ष्मी नारायण भाला ने बताया कि भारतीय संविधान मूल रूप से 22 अध्यायों में विभक्त था तथा प्रत्येक अध्याय के प्रारंभ में कुल 28 चित्रों का समावेश किया गया था, जिनके माध्यम से भारत की सभ्यता, सांस्कृतिक निरंतरता, न्याय, समृद्धि, कर्तव्य और राष्ट्रधर्म की अवधारणा को अभिव्यक्ति दी गई थी। उन्होंने कहा कि इन चित्रों के निर्माण में महान कलाकार नंदलाल बोस एवं उनके सहयोगियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पावर पॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से उन्होंने इन चित्रों के भावार्थ को अत्यंत प्रभावी ढँग से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया।

उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि मौलिक अधिकारों से संबंधित भाग में राम–राज्य की अवधारणा न्यायपूर्ण शासन और नागरिक गरिमा का प्रतीक है, जबकि राज्य के नीति निदेशक तत्वों में गीता के विचार सेवा, त्याग और कर्तव्यपरायणता की प्रेरणा देते हैं। महात्मा गौतम बुद्ध का चित्र अहिंसा और एकता का संदेश देता है तथा महावीर जैन का चित्र आत्मसंयम एवं सामाजिक संगठन की प्रेरणा प्रदान करता है। इसी प्रकार कुबेर एवं श्रीहनुमान राज्य की समृद्धि और शक्ति के प्रतीक के रूप में, राजा विक्रमादित्य का दरबार न्याय–व्यवस्था के आदर्श रूप में तथा नालंदा विश्वविद्यालय ज्ञान और न्याय के विस्तार के प्रतीक के रूप में चित्रित किए गए हैं। उन्होंने अश्वमेघ यज्ञ को शासन के विस्तार एवं केंद्र–राज्य संबंधों की शक्ति का प्रतीक बताते हुए भगवान नटराज एवं स्वास्तिक को वित्तीय–संपत्ति तथा सांस्कृतिक संतुलन का द्योतक बताया।

मुख्य वक्ता ने यह भी उल्लेख किया कि बाद में आमजन के बीच जो संविधान की मुद्रित प्रतियाँ आईं, उनमें इन चित्रों को हटा दिया गया, जिससे नई पीढ़ी इन प्रतीकात्मक भावों से अपरिचित होती गई। उन्होंने कहा कि इन चित्रों पर गंभीर शोध एवं अध्ययन की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थी संविधान की मूल भावना, सांस्कृतिक आधार और राष्ट्रीय दृष्टि को समझ सकें। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे संविधान के सांस्कृतिक आयामों को समझते हुए राष्ट्रीय एकता, कर्तव्यनिष्ठा और नागरिक चेतना को आत्मसात करें।

कार्यक्रम में अतिथि परिचय एवं स्वागत उद्बोधन अधिष्ठाता कला संकाय एवं विधि संकाय की समन्वयक प्रो. नीता यादव द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा आभार–ज्ञापन अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ ने किया। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव, पूर्व अधिष्ठाता एवं छात्र कल्याण प्रो. हरीशकुमार शर्मा, विज्ञान

संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. आशुतोष वर्मा, डॉ. लक्ष्मण सिंह, डॉ. जयसिंह यादव, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. संतोष सिंह, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. रक्षा, डॉ. रेनू त्रिपाठी, डॉ. अमित साहनी, डॉ. मुन्नू खान, डॉ. अब्दुल हफीज, डॉ. शिवम शुक्ला सहित विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षक, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं भगवान बुद्ध के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया तथा राष्ट्रगान के साथ इसका समापन हुआ।

'बौद्धिक संपदा अधिकार' पर प्रो० आशु रानी का व्याख्यान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर) के विज्ञान संकाय द्वारा 18 मार्च 2026 को गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में भारत सरकार के लक्ष्य विकसित भारत–2047 के संदर्भ में बौद्धिक संपदा अधिकारों के महत्व से अवगत कराने के उद्देश्य से "बौद्धिक संपदा अधिकार : विकसित भारत–2047 में प्रासंगिकता" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० कविता शाह एवं डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा की कुलपति प्रो० आशु रानी की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो० आशु रानी ने कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार नवाचार, अनुसंधान एवं तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क एवं डिजाइन जैसे अधिकार न केवल शोधकर्ताओं और आविष्कारकों के कार्यों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, बल्कि उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में भी सक्षम बनाते हैं। साथ ही, यह भी बताया गया कि IPR (बौद्धिक संपदा अधिकार) का प्रभावी उपयोग देश की आर्थिक वृद्धि, औद्योगिक विकास और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० कविता शाह ने कहा कि बौद्धिक संपदा अधिकार आज के ज्ञान–आधारित समाज की आधारशिला हैं। यदि हम विकसित भारत–2047 के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें नवाचार, अनुसंधान और रचनात्मकता को बढ़ावा देना होगा तथा उनके संरक्षण के लिए प्रभावी IPR प्रणाली को अपनाना होगा।"

विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो० प्रकृति राय ने विषय प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान समय में उच्च शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे छात्रों में नवाचार की भावना विकसित करें। प्रो. एस. के. श्रीवास्तव ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए उपस्थित गणमान्यजनो सभी छात्रों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव,शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो जितेंद्र कुमार सिंह, प्रो कौशलेन्द्र चतुर्वेदी, डॉ. लक्ष्मण सिंह, डॉ. अमित साहनी, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. अब्दुल हफीज, डॉ.शिवम शुक्ला, डॉ. रेनू त्रिपाठी, डॉ. विमल वर्मा सहित विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षक, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्रा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं आगरा विश्वविद्यालय के मध्य समझौता–ज्ञापन हस्ताक्षरित

दिनांक 18 मार्च 2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु एवं डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के मध्य शैक्षणिक एवं शोध सहयोग को बढ़ावा देने हेतु एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया। यह समझौता दोनों विश्वविद्यालयों के बीच अनुसंधान सहयोग, संयुक्त विकास कार्यक्रमों तथा पाठ्यक्रम साझेदारी को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

इस अवसर पर दोनों विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने आपसी सहयोग को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। आन्तरिक गुणवत्ता निर्धारण प्रकोष्ठ (IQAC)के निदेशक प्रो. सौरभ ने बताया कि समझौते के अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त रूप से शोध परियोजनाओं पर कार्य करेंगे, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए आदान–प्रदान कार्यक्रम संचालित करेंगे तथा विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता साझा करेंगे। इसके साथ ही, नवीन पाठ्यक्रमों के विकास, कार्यशालाओं, सेमिनारों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संयुक्त आयोजन भी किया जाएगा।

सम्पादकीय

एक प्रेरक कथा है कि एक व्यक्ति ने उत्तराधिकार तय करने हेतु अपने बेटों की बुद्धिमत्ता की परीक्षा लेने के लिये उन्हें एक–एक रुपया दिया और कहा कि इससे कोई ऐसी चीज लेकर आओ, जिससे सारा घर भर जाये। बेटों को कुछ ठोस उपाय सूझा ही नहीं। अपनी बुद्धि के अनुसार उन्होंने प्रयास भी किया, परन्तु जो लेकर आये, उससे घर का एक कोना भी नहीं भरा। भला एक रुपये में ऐसा मिल ही क्या सकता था? परन्तु एक बेटा उनमें बुद्धिमान था। उसने भी सोचा और तब एक युक्ति उसके मन में आयी। वह एक रुपये की मोमबत्तियाँ खरीदकर ले गया। उन्हें जलाकर घर में स्थान–स्थान पर रख दिया और इस तरह पूरे घर को उजाले से भर दिया।

मनुष्य की बुद्धिमता का पहला और बड़ा प्रमाण तो यही है कि उसने उजाले को चुना। धरती पर असंख्य जीवों की उपस्थिति है। हिन्दू मान्यता के अनुसार तो यह संख्या चौरासी लाख है। इतने जीवों में से बहुतों को तो अँधेरा ही प्रिय है। धरती पर उजाला भी है, अन्धेरा भी। दोनों प्रायः बराबर अनुपात में हैं। कम–से–कम भारत के बारे में तो ऐसा कहा ही जा सकता है। कल्पना करें कि यदि सारे प्राणी धरती पर होते और एकमात्र मनुष्य नाम का प्राणी नहीं होता तो क्या स्थिति होती?

मनुष्य ने अगर उजाले को चुना तो अँधेरे को उजाले में बदलने का उपाय भी खोजा। इसी के लिये उसने दीप का आविष्कार किया। प्राकृतिक प्रकाश से इतर धरती पर जो भी और जिस भी तरह का प्रकाश है, वह मनुष्य की ही देन है। मनुष्य ने अँधेरा मिटाने के लिये प्रकाश उत्पन्न किया तो प्राकृतिक प्रकाश का भी भरपूर सदुपयोग किया। आज हमारे पास प्रकाश के एक–से–एक बेहतर स्रोत और माध्यम हैं, परन्तु हमारी स्मृतियों और परम्परा में दीप आज भी महत्त्वपूर्ण है। वह उजाले का प्रतीक है। अन्धकार से लड़ने और उस पर विजय प्राप्त करने का प्रतीक है। यह ज्ञान का भी प्रतीक है, जिसके उजाले में सुदीर्घ साधना के फलस्वरूप धरती पर आज अकल्पनीय विकास का प्रकाश फैल चुका है। यह हमारी आस्था का प्रतीक है, विश्वास का प्रतीक है, आशा का प्रतीक है, अखण्ड साधना का प्रतीक है, लघु होते हुए भी महत्तर कार्य करने का प्रतीक है, स्वयं को तपाकर दूसरों के काम आने वाली वृत्ति और प्रवृत्ति का भी प्रतीक है। आखिर दीप की महत्ता हमारे यहाँ ऐसे ही नहीं है।

अँधेरे को मिटाना असम्भव है, परन्तु उससे लड़ा तो जा सकता है। बार–बार परास्त तो किया जा सकता है। यह बहुरूपिया है जो भेष बदल–बदलकर बार–बार हमारे सामने आता है। हम फिर इससे भिड़ते हैं, फिर भिड़ते है। कभी जीतते हैं, कभी हारते भी हैं। प्रकाश और अन्धकार का संघर्ष शाश्वत है और यदि प्रकाश हो सके तो अन्धकार का परास्त होना भी निश्चित है। अन्धकार तभी तक बली है, जब तक हम प्रकाश न कर पायें। तो आवश्यकता अन्धकार की चिन्ता करने की नहीं, उससे लड़ने योग्य प्रकाश उत्पन्न करने के लिये चिन्तन तथा चेष्टा करने की है।

भगवान बुद्ध ने कहा कि **'अत्त दीपो भव'** अर्थात् स्वयं दीपक बन जाओ, आत्मदीप प्रकाशित करो। अपने भीतर के उजाले को देखो, उसे जाग्रत करो और उसके प्रकाश में स्वयं भी स्नात होओ तथा दूसरों का भी पथ प्रकाशित करो। आत्मदीप क्यों? अँधेरा बाहर ही नहीं है, हमारे भीतर भी उसका साम्राज्य कायम है। अपने भीतर के अँधेरे को परास्त किये बिना हम बाहर के अँधेरे से मुकाबला नहीं कर सकते। इसलिये अपने भीतर के दीप को पहचानना और उसे वालना आवश्यक है। यह दीप हमारा आत्म है, आत्मा है। हमारी चेतना है, हमारी आशा है, हमारा विश्वास है, साधन है, साधना है, प्राण है, प्रण है, परिणाम है और बहुत क्या तो जीवन है, जीवनाधार है।

आत्मदीप बनना हमारी बहुत सी समस्याओं का समाधान है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, परन्तु हममें से अधिकतर दूसरों से अधिक अपेक्षा करते है। अपने को बचाना चाहते हैं। मतलब यह कि अपने अधिकार हमें प्रिय हैं और दूसरों के कर्तव्यों पर हमारा अधिक ध्यान रहता है। सोचिए कि यदि घनघोर अँधेरे में कोई एक व्यक्ति दीप वालकर निकले और शेष सौ लोग खाली हाथ हों तो वह एक अकेला दीप कितने लोगों के काम आ सकेगा? वहीं दूसरी ओर यदि नब्बे लोगों के हाथों में प्रज्वलित दीपक हों और दस लोग खाली हाथ हों तो क्या स्थिति होगी? समाज में, राष्ट्र में हमें यही स्थिति बनानी होगी कि सौ में से पूरे सौ न भी सही, तो कम–से–कम नब्बे लोगों के हाथ में दीप हों। हर सौ में से यदि नब्बे व्यक्ति भी आत्मप्रकाश से भरपूर होंगे तो किसी कारण से बच रहे शेष दस व्यक्ति भी उस सामूहिक प्रकाश से लाभान्वित होंगे। लेकिन यदि यह संख्या विपरीत होगी, तब कितनी परेशानी होगी?

मनुष्य की यह भी विशेषता है कि वह चीजों को प्राप्त करना जानता है, तो छोड़ने का भी माद्दा उसके भीतर है। संग्रह की कामना के साथ त्याग की भावना भी उसके भीतर है। यही पारस्परिक सहयोग का आधार है। इसी ने समाज–संस्कृति की रचना की है। उसे बचाया है। मनुष्य मात्र पाना ही नहीं चाहता, देना भी जानता है। यह उसकी प्रवृत्ति है। प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं–

यही पशु–प्रवृत्ति है कि आप ही आप चरे।
मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिये मरे।

तो, वह मनुष्य ही कैसा, जो दूसरे के लिये मरना न जाने। मरने का मतलब हर समय अपने प्राण न्योछावर करना ही नहीं होता। मरना मतलब दूसरे के काम आना। दूसरे के कष्ट में साथ खड़े होना। उसे कष्ट से निकालने में अपना सहयोग प्रदान करना। इसी आधार पर तुलसीदास ने तो परोपकार को सर्वश्रेष्ठ धर्म ही बता दिया है–

'परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।'

अर्थात परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरे को पीड़ा पहुँचाने के समान अधर्म नहीं है।

तो कुल मिलाकर यही कि हम अपनी प्रवृत्ति और संस्कृति के अनुसार दीप के साथ खड़े रहेंगे। प्रकाश के पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे और स्वयं प्रकाशवान, सामर्थ्यवान होकर विश्व को इसके लिये प्रेरित करते रहेंगे। 'भारत' का तो अर्थ ही है– प्रकाश की साधना। 'भा' अर्थात् प्रकाश और 'रत' माने संलग्न। हमने आरम्भ से ही आलोक–पथ चुना, प्रकाश की साधना में अपनी रुचि दिखायी तो हम 'भारत' हुए। कालान्तर में अनेक कारणों से हम उस साधना को नहीं साध सके तो पिछड़ गये। आज फिर हम जाग रहे हैं, तो निश्चय ही हमारी साधना भी सिद्धि में बदलेगी ही, ऐसा विश्वास रखकर अपने हमें अपने साध्य की ओर ध्यान देना चाहिए। हम दीप वालें, पर मात्र अपने लिये नहीं। हम स्वयं भी प्रकाशित हों और हमारे प्रकाश से दूसरे भी लाभान्वित हों– ऐसा भाव और ध्येय रखकर, जैसा कि कविवर गोपालदास 'नीरज' कहते हैं–

'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना,
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाये।'

तिरुवल्लुवर

–डॉ. विशुद्धानन्द पाठक

तिरुवल्लुवर अर्थात् संत (तिरु)वल्लुवर ईसा सम्वत् की प्रारंभिक शताब्दियों के महान् संत और कवि थे, जिनका ग्रंथ **तिरुकुराल** तमिल साहित्य के वेद के रूप में प्रशंसित है। उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में बहुत ही कम जानकारियाँ प्राप्त हैं। यहाँ तक कि तिरुवल्लुवर और **तिरुकुराल** भी लेखक और ग्रंथ के वास्तविक नाम नहीं हैं। परंपरा द्वारा केवल यह ज्ञात होता कि वे मइलापुर (चेन्नई) में एक बुनकर के घर में पैदा हुए थे, जिस परिवार के लोग भविष्यवाणी किया करते थे। किन्तु **तिरुकराल** से उनके बुनकर होने का वैसा कोई प्रमाण नहीं प्राप्त होता, जैसा कबीर के ग्रंथों से कबीर के बारे में प्राप्त होता है। **तिरुकुराल** दोपाइयों में लिखी गयी धर्म, अर्थ और काम (प्रेम) नामक जीवन के उन तीन उद्देश्यों की शिक्षा देने वाली रचना है जो उनके वास्तविक और आदर्श स्वरूप की व्याख्या करती है और अन्ततः गृहस्थ जीवन को ही आदर्श जीवन बताती है। इन त्रिवर्गों की प्राप्ति और भोग के बाद मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य तपस् होना चाहिए, जिसमें गृह–त्याग और ईश्वर के ध्यान द्वारा जीवन–मरण के बन्धन से मुक्त होकर परम तत्त्व की प्राप्ति अन्तिम लक्ष्य के रूप में होती है। तिरुकुराल पर तमिल में कम से कम १२

टीकाएँ लिखी गयीं। उनमें परिमेललगर द्वारा लिखित अत्यन्त विद्वतापूर्ण टीका तमिल और संस्कृत संस्कृतियों के उच्चतम एकीकरण को दर्शाती है।

तिरुकुराल तीन खण्डों वाला ग्रंथ हैं, जिनमें क्रमशः सम्यक् आचार (धर्म), अर्थ सहित दण्डनीति (व्यवहार) और प्रेम (काम) की व्याख्याएँ की गयी हैं। कल्लदर सहित तृतीय संगम के ग्रंथों के विचारकों ने इस ग्रंथ को **वेद** के समान माना है, जिसके शब्दों को बार–बार दुहराने पर भी उनका तत्त्वार्थ और महत्त्व समाप्त नहीं होता। कथित है कि इसमें जानने लायक सब कुछ वर्तमान है। इसमें स्वर्ग में प्राप्त होने वाला वह अमृत है जो केवल कुछ को ही नहीं, सबको समान रूप से प्राप्त है। कुछ विचारक इसे तमस् को मिटाने वाले उस दीप से मिलाते हैं, जिसका तेल धर्म है, बाती अर्थ है और घी काम है। कवि कल्लधर ने इसके सबसे बड़े गुण के रूप में एक विश्व की इसकी कल्पना की प्रशंसा की है। यही कारण हैं कि सभी संप्रदाय चाहे वे बौद्धहो, जैन हों, वैष्णव हों. शैव हो अथवा अन्य, तिरुवल्लुवर को अपना कहते हैं। ''यह मानना होगा कि यह सत्य का पूर्णरूप है, नैतिक और धार्मिक मूल्यों की एक सम्पूर्ण विधिक रचना है तथा कला और वैचारिक तत्त्वों का एक सम्पूर्ण संग्रह है।''

तिरुवल्लुवर की पत्नी का नाम वासुकि था, जो **तिरुकुराल** में वर्णित आदर्श गृहस्थ जीवन की साक्षात मूर्ति थीं। उन दोनों के विवाह और जीवन की अन्य सभी घटनाओं का ज्ञान बाद में पनपी परंपराओं और अनुश्रुतियों के माध्यम से ही विकसित हुआ। उन अनुश्रुतियों में उनके विवाह, वैवाहिक जीवन और अन्त में वासुकि की मृत्यु के बाद उत्पन्न तिरुवल्लुवर के मनोभावों की अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं। वासुकि की मृत्यु तथा उनके शवसंस्कार के बाद तिरुवल्लुवर के मुख से यह पद निकला था– ''मेरे नित्य के भोजन की भाँति मीठी, स्नेहमयी मेरी पत्नी, मेरे प्रत्येक शब्द के प्रति आज्ञाकारिणी, मेरे पैरों को दबाने वाली, सबके बाद सोने वाली, सबके पहले उठ जाने वाली, हे सुमधुरे ! अब रात्रि को मेरी आँखों में नींद कहाँ !''

सर ए. ग्राण्ट के शब्दों में जो संत के मानव स्वरूप के वैभव का दर्शन करना चाहते हैं, वे मइलापुरम् जाकर संत की मूर्ति को देख सकते हैं। उनके बालों की जटाएँ, घनी मूँछें, छाती तक लटकी हुई दाढ़ी, गम्भीर और चौड़ा ललाट, उदात्त हृदय का दर्शन कराने वाली बड़ी–बड़ी आँखें तथा उनके विशाल आकार हमें प्लेटो (अफलातून) और सुकरात की याद दिलाते हैं। और इनके बाद उनके दाहिने हाथ की माला तथा बायें हाथ का नीतिग्रंथ (तिरुकुराल); एक ऊँचे आसन पर संत की बैठी हुई मुद्रा, मानो अपने शिष्यों को उपदेश देती हुई हमें यह विश्वास कराती है कि अगस्त्य के अतिरिक्त यह एक तमिल ऋषि ही है।

तिरुवल्लुवर कृत **कुराल** से तत्कालीन समाज और संस्कृति की एक अच्छी जानकारी प्राप्त होती है। उससे राजतंत्रात्मक राज्यों की सप्त प्रकृतियों, तत्कालीन राज्यों में आनुवंशिक उत्तराधिकार क्रम तथा तत्कालीन व्यापार और कृषि से प्राप्त अनेक प्रकार के करों की जानकारी होती है। राजदरबार में जनप्रतिनिधि, पुरोहित, राजवैद्य, गायक, ज्योतिषी और स्तुतिकार रहा करते थे। किन्तु उनमें जातियों का कोई वर्गीकरण नहीं था। राजसभा को **मणरम्** कहा जाता था, जिसमें बैठ कर राजा मुकदमों का फैसला किया करता था। राजदरबार में आगन्तुकों के लिये भोज भी हुआ करते थे, जिनमें प्रशंसक कवियों को इतना छककर खिलाया जाता था कि खाते–खाते उनके दाँत भी भोड़े हो जाते थे। **कुराल** की गिनती उन थोड़े संगम ग्रंथों में की जाती है, जिनमें प्राचीन तमिलों के साधारण समाज और जनसंस्कृति के सबसे बढ़िया चित्रण प्राप्त होते हैं। कदाचित् यही कारण है कि इसके कई–कई अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किये गये हैं।

(उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से प्रकाशित विशुद्धानन्द पाठक की पुस्तक 'दक्षिण भारतीय संस्कृति' से साभार)

इटानगर का इटाफोर्ट

–सांवरमल सांगानेरिया

न्यीदर नाम्लो की प्रार्थना पूरी होने पर, ख्याल आया कि परिषद् के बगल में ही स्थित म्यूजियम को चलकर देखा जाय। छोटे–से संग्रहालय के परिसर में पुराने इटा फोर्ट की दीवारों के खंडहर खड़े हैं। अब इसकी मोटी दीवारों के बस भग्नावशेष ही शेष बचे हैं। यह किला छह सौ वर्ष पुराना बताया जाता है। यहाँ के प्राचीन निवासी न्यिशी जनजाति ईंटा को 'हिटा' कहते हैं। इसीलिए इस हिटानगर को कालान्तर में इटानगर कहा जाने लगा। इस किले की किलाबन्धी मानव और प्रकृति द्वारा की गयी है। इसके पूर्व और पश्चिम की ओर जहाँ ईंटों की दीवारें हैं, वहीं उत्तर और दक्षिण की प्राचीरों का काम पहाड़ियाँ करती हैं। पश्चिम की लगभग डेढ़ किलोमीटर लम्बी दीवार में दो दरवाजे हैं। पूर्व की एक किलोमीटर लम्बी दीवार में एक प्रवेश द्वार है जिसे पूर्वी दरवाजा कहा जाता है। पश्चिमी दीवार गहरे नालों, ऊँची–नीची जमीन के ऊपर होती हुई जाती है। यह दीवार करीब पाँच फुट चौड़ी है। इसकी ऊँचाई के बारे में अनुमान लगाया जाता है कि यह सोलह फुट ऊँची रही होगी। किले के उत्तर और दक्षिण की पहाड़ियाँ किसी भी मानव निर्मित सुरक्षा–दीवारों से अधिक सुरक्षित और उपयोगी हैं। उत्तरी पहाड़ी कुछ कम ऊँची है किन्तु इस ओर से आक्रमण की सम्भावना भी नहीं के बराबर थी।

किले का पठारनुमा सुरक्षित क्षेत्र लगभग एक वर्ग किलोमीटर से कुछ अधिक ही है। यह पूरा क्षेत्र दक्षिण से उत्तर की ओर ढलुवा है। पानी की निकासी के लिए कई नाले हैं। किले के तीनों दरवाजे सामरिक दृष्टि से भिन्न–भिन्न आकार के हैं। पूर्वी दरवाजा ईंटों और पत्थरों से बना है। इन पत्थरों पर उस जमाने के कारीगरों की बारीक हस्तकला का भी प्रमाण मिलता है। अनुमान लगाया गया है कि यही दरवाजा किले का प्रमुख प्रवेश द्वार रहा होगा। इसी द्वार के पास अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल के लिए राजभवन बनाया गया है। पूर्वी द्वार की अपेक्षा पश्चिमी द्वार काफी अच्छी हालत में है और आकार में भी उससे बड़ा। इस दरवाजे में पत्थरों के साथ मुख्यतया ईंटों का अधिक प्रयोग किया गया है। इस दरवाजे से असम के गोहपुर और रामघाट की तरफ से आने वाले दुश्मनों पर नजर रखी जाती थी। दक्षिणी दरवाजा समतल जमीन पर है। इस दरवाजे के पास कई कमरे हैं जो सुरक्षा कर्मचारियों के काम आते रहे होंगे। अनुमान लगाया गया है कि इसी दरवाजे के आसपास राजा और उसके प्रमुख व्यक्ति रहा करते थे। इस तरह यह किला दुश्मन के आक्रमणों से पूर्णतया सुरक्षित था।

तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सुतिया वंश के राजा की राजधानी सदिया में स्थापित हो चुकी थी। इनके राज्य का विस्तार वर्तमान अरुणाचल प्रदेश के लिकावाली तक या इससे भी आगे तक था। उसी कालावधि में आहोमों ने असम में प्रवेश कर अपनी राजधानी चराईदेव में बनायी। आहोम राज्य के पश्चिम में कछारियों का शक्तिशाली राज्य था। कछारियों के दबाव के चलते कामरूप राज्य की राजधानी कामतापुर आ गयी। कछारी और कामरूप राज्यों के बीच ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर भूयाँ राज्य था। भूयाँओं ने भी अपनी राज्य की सीमा बढ़ाते हुए सुवणशिरी की घाटी के कुछ इलाकों पर अपना अधिकार कर लिया। पहले भूयाँ लोग कामरूप राज्य के अधीन जागीरदार थे। केन्द्रीय सत्ता कमजोर होने पर ये अपने को स्वतन्त्र घोषित करने लगे।इन अनिश्चित परिस्थितियों में एक भूयाँ जागीरदार पहाड़ पर आकर बस गया और उसने अपनी सुरक्षा की दृष्टि से इस इटा फोर्ट का निर्माण कराया। यहाँ प्रचलित अनेक कथाओं और अलग–अलग जनश्रुतियों से ऐसा प्रतीत होता है कि इस इटा फोर्ट की अपने जमाने में काफी ख्याति फैल गयी थी।

गोहाँई बरुवा लिखित 'असमर बुरंजी' (असम का इतिहास) में लिखा है कि माजुली द्वीप स्थित रत्नपुर के राजा रामचन्द्र का राज्य वर्तमान अरुणाचल के भालुकपुंग तक विस्तृत था। आहोम सेना ने जब इसके राज्य पर आक्रमण किया तो रामचन्द्र पहाड़ पर भाग गया और वहाँ 'मायापुर' नामक अपनी नयी राजधानी बनाकर अपना नाम मायामत्त रखा। उस काल में पूर्व की ओर से आहोमों के आक्रमण हो रहे थे और पश्चिम दिशा से आक्रमणकारी मुसलमान हमले कर रहे थे। इसलिए रामचन्द्र ने अपनी परमसुन्दरी गर्भवती रानी हारमती को कछारी राज्य में भेज दिया, ताकि वहाँ वह बिना किसी शत्रु–भय के अपनी सन्तान को जन्म दे सके। वहाँ हारमती ने एक पुत्र को जन्म दिया। बालक का नाम अरिमत्त रखा गया। अबोध

अरिमत्त को अपने पिता से मिलने का कभी अवसर नहीं मिला। अरिमत्त आगे चल कर पराक्रमी और साहसी व्यक्ति निकला। उसने अपने बाहुबल से विश्वनाथ (असम के शोणितपुर जिले में स्थित एक नगर) के उत्तर में प्रतापपुर में अपना राज्य स्थापित किया।

कालान्तर में अरिमत्त ने अपने पिता के ही राज्य पर आक्रमण कर अनजाने में अपने पिता को मार डाला। बाद में अरिमत्त को रामचन्द्र के साथ अपने पिता–पुत्र के सम्बन्ध का पता चला तो उसे बहुत पछतावा हुआ। पितृ–वध के पाप से त्राण पाने के लिए उसने अनेक उपाय किये। कुछ इतिहासकारोंका यह भी कहना है कि अरिमत्त ने पश्चात्तापवश आत्महत्या कर ली।

इस किले के निर्माता के बारे में एक मत नहीं है. फिर भी पुरातत्त्ववेत्ताओं के मतानुसार इसका निर्माण 1350 से 1450 के बीच हुआ है। आज से लगभग छह सौ वर्ष पहले इस इटा किले के निर्माण में अस्सी लाख ईंटें लगी थीं। किले के निर्माता के बारे में सच्चाई जो भी हो, किन्तु इसी इटा किले के भग्नावशेषों के नाम पर इस प्रदेश की राजधानी का नाम इटानगर रखा गया है।

आज अपनी तमाम प्राकृतिक कठिनाइयों से निकलकर इटानगर अरुणाचल की सुन्दर पर्वतीय राजधानी है। नगर की चौड़ी बल खाती सड़कों पर घूमता पर्यटक अपने चारों ओर बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। आज यहाँ दो–तीन मंजिल से पाँच–सात तल्लों तक की पक्की बिल्डिंगें देख कर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इन्हें बनाने में कितनी कठिनाइयाँ आयी होंगी। क्योंकि भवन–निर्माण की सारी वस्तुएँ बाहर से मँगानी पड़ती हैं।

नगर के बीच बना इन्दिरा पार्क प्राकृतिक सौन्दर्य का अद्‌भुत उदाहरण है। यह पार्क समतल भूमि पर न होकर ऊँची–नीची पहाड़ी जगह पर बना है। इन टीलेनुमा पहाड़ियों पर उगी हरी दूब मानो किसी गलीचे की तरह बिछी है। इनके बीच से पार्क में घूमने के लिए आड़ी–तिरछी पक्की सड़कें बनी हैं। पार्क में लगे पुस्तक मेले में किताबों से रूबरू होने का मुझे अनायास हो मौका हाथ लग गया। अरुणाचल विषयक कुछ किताबें मैंने खरीदीं। पार्क के एक छोर से दूसरा छोर नहीं देखा जा सकता। इससे ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कितना विस्तृत पार्क है। पार्क में खड़े ऊँचे–ऊँचे विभिन्न प्रजातियों के पेड़ों के तनों की मोटाई देख कर सहज ही इनके सैकड़ों वर्ष पुरातन होने का अन्दाजा लगता है। वृक्षों की हरी–हरी, नरम, नुकीली, चमकीली पत्तियोंवाली शाखाएँ मानो मेरे अभिवादन में नीचे झुकी थीं। कुछ पेड़ अपना बदन ताने किसी अकड़बाज की तरह खड़े थे।

(हेरिटेज फाउण्डेशन, गुवाहाटी से प्रकाशित सांवरमल सांगानेरिया की यात्रा कथा 'अरुणोदय की धरती पर' से साभार)

हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

–रामकुमार वर्मा

हे ग्राम देवता ! नमस्कार !
सोने–चाँदी से नहीं किन्तु तुमने मिट्टी से किया प्यार।
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

जन कोलाहल से दूर–कहीं एकाकी सिमटा–सा निवास,
रवि–शशि का उतना नहीं कि जितना प्राणों का होता प्रकाश।
श्रम वैभव के बल पर करते हो जड़ में चेतन का विकास,
दानों–दानों में फूट रहे सौ–सौ दानों के हरे हास।
यह है न पसीने की धारा, यह गंगा की है धवल धार!
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

अधखुले अंग जिनमें केवल, हैं कसे हुए कुछ अस्थि–खण्ड,
जिनमें दधीचि की हड्डी है, यह वज्र इन्द्र का है प्रचण्ड !
जो है गतिशील सभी ऋतु में गर्मी वर्षा हो या कि ठण्ड,
जग को देते हो पुरस्कार, देकर अपने को कठिन दण्ड !
झोपड़ी झुकाकर तुम अपनी ऊँचे करते हो राज–द्वार !
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

ये खेत तुम्हारी भरी–सृष्टि तिल–तिल कर बोए प्राण–बीज,
वर्षा के दिन तुम गिनते हो, यह परिवा है, यह दूज, तीज।
बादल वैसे ही चले गए, प्यासी धरती पाई न भीज,
तुम अश्रुकणों से रहे सींच इन खेतों की दुख भरी खीज।
बस, चार अन्न के दाने ही नैवेद्य तुम्हारा है उदार!
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

यह नारी–शक्ति देवता की कीचड़ है जिसका अंग–राग
यह भीर हुई सी बदली है जिसमें साहस की भरी आग,
कवियों ! भूलो उपमाएँ सब, मत कहो कुसुम, केसर, पराग,
यह जननी है, जिसके गीतों से मृत अंकुर भी उठे जाग,
उसने जीवन भर सीखा है, सुख से करना दुख का दुलार !
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

ये राम–श्याम के सरल रूप, मटमैले शिशु हँस रहे खूब,
ये मुन्ना, मोहन, हरे कृष्ण, मंगल, मुरली, बच्चू, बिठूब,
इनको क्या चिन्ता व्याप सकी, जैसे धरती की हरी दूब
थोड़े दिन में ही ठण्ड, झड़ी, गर्मी सब इनमें गई डूब,
ये ढाल अभी से बने छीन लेने को दुर्दिन के प्रहार !
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

तुम जन मन के अधिनायक हो, तुम हँसो कि फूले–फले देश।
आओ, सिंहासन पर बैठो यह राज्य तुम्हारा है अशेष !
उर्वरा भूमि के नये खेत के नये धान्य से सजे वेश,
तुम भू पर रहकर भूमि–भार धारण करते हो मनुज–शेष।
अपनी कविता से आज तुम्हारी विमल आरती लूँ उतार !
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

(प्रसिद्ध छायावादी कवि और साहित्यकार)

नम्बर गोल

(हास्य रचना)

–हरीशकुमार शर्मा

मच्छर कहने लगा है, रोज रात को आन।
अब तो आओ होश में, आ पहुँचा इम्तिहान।।
आ पहुँचा इम्तिहान, नींद से अब तो जागो।
खेलकूद, निद्रा, मस्ती, अब सब कुछ त्यागो।
होना चाहो पास, जुटो तो तन–मन–धन से।
या विचार दो त्याग, पास होने का मन से।।

ना जाने किस जन्म का, लिखा हुआ अभिशाप।
रात भर रटते रहो, सुबह मिले सब साफ।।
सुबह मिले सब साफ, याद कुछ भी न रहता।
रात–दिवस मैं इसी, सोच–सागर में बहता।
चाहे आये प्रलय, चाहे तूफाँ आ जाये।
इम्तिहान के सिवा मुझे, कुछ भी न डराये।।

भला हो विज्ञान का, बन गये अणु से बम।
बनाने वाले मर गये, रोने को रह गये हम।।
रोने को रह गये हम, समीकरणें हल करते।
दो–दो ट्यूशन पढ़कर भी, हम नहीं समझते।
मात–पिता हैं दुखी, रोज कहते हैं बेटा।
तुम सा पाया पुत्र, भाग्य है अपना हेठा।।

इंग्लिश भाषा पी गयी, सारे सिर का खून।
नहीं समझ में आ सका, बेतुका मजमून।।
बेतुका मजमून, गणित उससे भी आगे।
संस्कृत भाषा धन्य, जिसे पढ़ते बड़भागे।
मरु–मरीचिका मध्य, भटकता नित–प्रति मन है।
उपवन समझो जिसे, निकलता वह घन–वन है।

आर्ट में आया प्रश्न, वृत्त हैं कैसे गोल।
हमने फौरन लिख दिया, उत्तर गोलमटोल।।
उत्तर गोलमटोल, गोलगप्पा जो गोल है।

गोल हमारा मुँह, खेल की गेंद गोल है।
गोल हमारे नेता, गोल हैं अफसर सारे।
इसीलिये हैं गोल, गुरूजी वृत्त विचारे।।

उत्तर पढ़ गुरुदेव के, होंठ हो गये गोल।
और रिजल्ट में लिखे फिर, शब्द बराबर तोल।।
शब्द बराबर तोल, ठीक कहते हो भाई।
जैसे को तैसा होने में नहीं बुराई।।
गोल तुम्हारी बुद्धि, गोल तुममें गुण सारे।
इसीलिये मैं नम्बर करता, गोल तुम्हारे।।

एक आश में साँस है, एक साँस में आश।
प्रभो! तुम्हीं पर टिका है, अब केवल विश्वास।।
अब केवल विश्वास, शरण मैं तेरी आया।
कर दो मुझको पास, चलाकर अपनी माया।।
चाहे मारो थप्पड़, घूँसा, लातें कितनी।
कर दो मेरी पार नाव, ठोकर से अपनी।।

(आचार्य–हिन्दी विभाग)

(बुद्ध–प्रसंग)

वानरिन्द जातक

(इसे शास्ता ने वेणुवन में विहार करते समय देवदत्त द्वारा वध करने के प्रयत्न के सम्बन्ध में कहा। उस समय शास्ता ने ''देवदत्त वध करने के लिए प्रयत्न कर रहा है'' सुनकर ''भिक्षुओं ! देवदत्त मेरे वध के लिए इस समय ही नहीं प्रयत्न कर रहा है, पहले भी प्रयत्न किया ही था, किन्तु भय मात्र भी उत्पन्न नहीं कर सका।'' कह अतीत कथा कही।)

प्राचीन काल में वाराणसी में ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय बोधि–सत्त्व बन्दर की योनि में उत्पन्न होकर सयाने हो, घोड़े के बच्चे के समान शक्तिशाली अकेले विचरण करने वाले होकर नदी के किनारे विहार करते थे। उस नदी के बीच नाना प्रकार के आम, कटहल आदि फल वाले वृक्षों से युक्त एक छोटा सा द्वीप था। हाथी के समान बलवान शवितशाली बोधिसत्त्व नदी के इस पार से उछलकर छोटे द्वीप के उस ओर नदी के बीच में एक पथरीली चट्टान थी उस पर गिरते थे, वहाँ से उछलकर उस छोटे द्वीप पर गिरते थे। वहाँ नाना प्रकार के फलों को खाकर सन्ध्या समय उसी उपाय से लौटकर अपने वास स्थान में रहकर दूसरे दिन भी वैसा ही करते थे। इस प्रकार वहाँ वास करते थे।

उस समय एक मगर सपत्नीक उस नदी में रहता था। उसको उसकी स्त्री ने बोधिसत्त्व को इधर से उधर जाते हुये देखकर बोधिसत्व के कलेजे को खाने की इच्छा उत्पन्न कर मगर से कहा– ''आर्य! मुझे एक श्रेष्ठ बन्दर के कलेजे को खाने की इच्छा हुई है।'' मगर ने बहुत अच्छा''पाओगी'' कहकर ''आज उसे सन्ध्या समय छोटे द्वीप से आते हुये ही पकडूँगा'' (ऐसा सोचकर जाकर पथरीली चट्टान पर लेट रहा। बोधिसत्त्व ने दिन भर विचरण कर सन्ध्या समय छोटे द्वीप पर खड़े हुए ही पत्थर को देख सोचा–''यह पत्थर इस समय ऊँचा जान पड़ता है,क्या कारण है?'' उन्हें पानी का प्रमाण और पत्थर का प्रमाण भली प्रकार सुविचारित था। इसलिए उन्हें ऐसा हुआ–''आज इस नदी का पानी न घटा है, न बढ़ा ही है, किन्तु यह पत्थर बड़ा होकर दिखाई दे रहा है। क्या यहाँ मुझे पकड़ने के लिए मगर तो नहीं बैठा है?''उन्होंने ''जरा इसकी परीक्षा लूँगा'' (सोच) वहीं खड़े हो पत्थर के साथ बातचीत करते हुए के समान ही ''हे पत्थर!'' कह, प्रत्युत्तर न पाते हुए, तीन बार तक ''हे पत्थर!'' ''हे पत्थर! क्या उत्तर न दोगे?'' कहा।उधर से कोई उत्तर न पा फिर भी उस बन्दर ने''क्या है पत्थर! क्या उत्तर न दोगे?'' कहा। मगर ने ''अवश्य दूसरे दिनों यह पत्थर बड़े बन्दर का उत्तर देता था, इसका उत्तर (मैं भी) दूँगा।'' सोचकर ''हे श्रेष्ठ बन्दर क्या है?'' कहा।

''तू कौन है?''
''मैं मगर हूँ।''
''किसलिए लेटे हो?''
''तेरे कलेजे को चाहता हूँ।''

बोधिसत्त्व ने विचार किया– ''दूसरा मेरे जाने का मार्ग नहीं है। आज मुझे इस मगर को धोखा देना चाहिए।'' तब उससे इस प्रकार कहा– ''सौम्य मगर! मैं अपने को तेरे लिए त्याग दूँगा। तू मुख फैलाकर मुझे अपने पास आने के समय पकड़ लेना।'' मगरों के मुख फैलाने पर आँखें बन्द हो जाती हैं। उसने इस बात का विचार न कर मुख फैलाया। तब उसकी आँखें बन्द हो गईं। वह मुख फैला आँखों को बन्द कर लेटा रहा। बोधिसत्त्व उस प्रकार को जानकर छोटे द्वीप से उछलकर जाकर मगर के मस्तक को कुचलवहाँ से उछलकर बिजली के समान चमकते हुए दूसरे किनारे खड़े हो गए। मगर ने उस आश्चर्य को देख ''इस श्रेष्ठ बन्दर द्वारा अत्यन्त आश्चर्यजनक (काम) किया गयागया।'' (ऐसा सोच) हे श्रेष्ठ बन्दर ! इस लोक में चार बातों से युक्त व्यक्ति शत्रुओं को पराजित कर देता है। वे सभी बातें तेरे अन्दर हैं, ऐसा समझता हूँ।'' कहकर इस गाथा को कहा–

यस्यैते चत्वारो धर्माः वानरेन्द्र ! यथा तव।
सत्यं धर्मो धृतिस्त्यागः दृष्टं सोऽतिवर्तते।।

(हे श्रेष्ठ बन्दर! सत्य, धर्म, धैर्य और त्याग– ये चारों बातें जिसमें होती हैं, जैसा कि तुममें है, वह शत्रु को पराजित कर देता है।)

इस प्रकार मगर बोधिसत्त्व की प्रशंसा कर अपने वासस्थान को चला गया ।

(शास्ता ने ''भिक्षुओं! देवदत्त इस समय ही मेरे वध के लिए प्रयत्न नहीं करता है. पहले भी प्रयत्न करता ही था'' (कहकर) इस धर्मोपदेश को कह मेल बैठाकर जातक को समाप्त करते हुए कहा– ''उस समय मगर देवदत्त हुआ था। उसकी स्त्री चिञ्चमागविका थी।)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 13.03.2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्राणी विज्ञान विभाग तथा जिला प्रशासन सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में किसानों में पैंगेसियस मछली पालन की आधुनिक तकनीकों, व्यवसायिक संभावनाओं तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी उन्नत करने के उद्देश्य से गौतम बुद्ध सभागार में "पैंगेसियस मछली पालन : किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सिद्धार्थनगर जनपद के जिलाधिकारी श्री शिवशरणप्पा जी. एन. ने कहा कि मत्स्य पालन किसानों की आय बढ़ाने लिए राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय प्रसाशन का यह संयुक्त प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभकारी माध्यम बन सकता है।

उन्होंने विशेष रूप से पैंगेसियस मछली पालन को कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाली तकनीक बताया। जिलाधिकारी ने किसानों को सरकार की विभिन्न मत्स्य योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान आत्मनिर्भर बन सकते हैं। साथ ही उन्होंने सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो कविता शाह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि किसानों के लिए आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि और मत्स्य क्षेत्र के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।

प्राणी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एवं संयोजक डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। वनस्पति विज्ञान

विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आशुतोष कुमार वर्मा ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों और यहाँ अध्ययन के लाभों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में स्वागत–संबोधन विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो प्रकृति राय ने दिया।

तकनीकी सत्रों में विभिन्न विशेषज्ञों ने पैंगेसियस मछली के पालन, बीज उत्पादन, हैचरी प्रबंधन, जल गुणवत्ता और रोग प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं। सर्वप्रथम जंतु विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ. विनीता रावत ने पैंगेसियस मछली का परिचय दिया, इसके पश्चात मत्स्य विभाग के सहायक निदेशक नन्द किशोर प्रसाद ने जनपद में पैंगेसियस मछली पालन को बढ़ावा देने के लिए विभाग द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न योजनाएं, जैसे– प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना, मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना, मत्स्य पालक कल्याण कोष आदि के बारे में विस्तार से बताया।

एक्वा डॉक्टर सॉल्यूशंस कोलकाता के डॉ देब तनु बर्मन ने पैंगेसियस पालन की व्यावसायिक संभावनाओं पर विस्तृत व्याख्यान दिया। इसके पश्चात गौरव एक्वा यूनिवर्स, महाराजगंज के संस्थापक वीर गौरव ने बीज उत्पादन, बीज स्टॉक प्रबंधन तथा जल गुणवत्ता और रोग प्रबंधन पर जानकारी दी। जंतु विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव ने हैचरी प्रबंधन तथा सहायक आचार्य एवं सह–संयोजक डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने रोग निदान के विषय में प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव, अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ, डॉ लक्ष्मण सिंह, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह सहित लगभग १५० किसानो ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। धन्यवाद–ज्ञापन डॉ विनीता रावत ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक बताया।

प्रबन्धन–अध्ययन विभाग में व्याख्यान का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के प्रबंधन अध्ययन विभाग में दिनांक 14 मार्च, 2026 को 'Industrial Exposure Through Live Project and Real Life Problem' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता Wooble Company के संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री आकाश जायसवालरहे।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. दीपक जायसवाल, सहायक आचार्य, प्रबंधन अध्ययन विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सौरभ, संकायाध्यक्ष वाणिज्य संकाय एवं विभागाध्यक्ष, प्रबंधन अध्ययन विभाग ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्यार्थियों को उद्योग जगत की वास्तविक समस्याओं को समझने तथा उनके व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य वक्ता श्री आकाश जायसवाल ने अपने व्याख्यान में विद्यार्थियों को उद्योगों में आने वाली वास्तविक समस्याओं, लाइव प्रोजेक्ट्स के महत्व तथा प्रबंधन शिक्षा में व्यावहारिक अनुभव की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने छात्रों को बताया कि वास्तविक जीवन की समस्याओं पर कार्य करने से उनके कौशल और निर्णय क्षमता का विकास होता है।

इस अवसर पर डॉ. विमल चंद्र वर्मा, सहायक आचार्य, बीबीए विभाग तथा डॉ. कहकशां खान, सहायक आचार्य, प्रबंधन अध्ययन विभाग भी उपस्थित रहे और उन्होंने भी अपने विचार व्यक्त किए।कार्यक्रम में प्रबंधन अध्ययन विभाग एवं बीबीए विभाग के सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और व्याख्यान से लाभान्वित हुए। अंत में कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन, डॉ. विमल चंद वर्मा, सहायक आचार्य, बीबीए विभाग द्वारा किया गया ।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने किया रक्तदान

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के स्वास्थ्य विभाग एवं माधव प्रसाद त्रिपाठी महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 16 मार्च को विश्वविद्यालय परिसर में एक भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सेवा एवं मानवता के प्रति समर्पित इस अभियान का उद्घाटन कुलपति प्रोफेसर कविता शाह द्वारा रक्तदान करके किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए रक्तदान किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि शिक्षण संस्थानों की समाज को जागरूक करने, उसे सशक्त बनाने तथा सामाजिक संवेदनशीलता को विकसित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा जगत से जुड़े कर्मचारी एवं विद्यार्थी जब ऐसे सेवा अभियानों से जुड़ते हैं तो वे अपने राष्ट्रधर्म के निर्माण में सक्रिययोगदान देते हैं। निस्वार्थ भाव से किया गया रक्तदान मानवता की सेवा का श्रेष्ठ उदाहरण है, क्योंकि एक रक्तदान से अनेक जरूरतमंद मरीजों को जीवनदान मिल सकता है तथा इससे अन्य लोग भी प्रेरित होकर समाजोपयोगी कार्यों में सहभागिता सुनिश्चित करते हैं।

कुलपति ने आगे कहा कि प्रत्येक संवेदनशील एवं जागरूक नागरिक का कर्तव्य है कि वह ऐसे अवसरों पर आगे बढ़कर न केवल समाज को जागरूक करे, बल्कि उनका मार्गदर्शन भी करे। उन्होंने इस रक्तदान अभियान को सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय संवेदना एवं राष्ट्र निर्माण की भावना को सुदृढ़ करने वाला महत्वपूर्ण प्रयास बताया।

इस अवसर पर अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव, डॉ. कपिल गुप्ता सहित विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने रक्तदान किया तथा अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई।

माधव प्रसाद त्रिपाठी महाविद्यालय की ओर से डॉ. वीरेंद्र कुमार सोनी, डॉ. रंजीत प्रसाद (आईटी), डॉ. अनीता (काउंसलर), डॉ. प्रशांत कुमार मिश्रा, डॉ. मणि रत्नम, डॉ. आलोक मिश्रा, सुश्री स्तुति त्रिपाठी तथा श्री पंकज पांडे, श्री राजकुमार त्रिपाठी, श्री जितेंद्र सहित अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहे और कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त चिकित्सालय के डॉ. ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव भी इस अवसर पर उपस्थित रहे और रक्तदान प्रक्रिया के सुचारु संचालन में सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महाराष्ट्र से पधारे हुए श्री लक्ष्मी नारायण के गर्म में उपस्थिति में रक्तदान कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ विश्वविद्यालय परिवार के अन्य गणमान्य सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में आयोजकों द्वारा सभी रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे सेवा एवं जनजागरूकता अभियानों को निरंतर जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया गया।

नव विक्रम संवत के उपलक्ष्य में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में आयोजित हुई विचार–गोष्ठी

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव विक्रम संवत् 2083 के आगमन के उपलक्ष्य में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के आवासीय परिसर में 19 मार्च को एक विचार–गोष्ठी का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय साहित्य परिषद, गोरक्षप्रांत की ओर से आयोजित इस संध्याकालीन गोष्ठी में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक श्री राजीव नयन रहे। उक्त अवसर पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि विक्रम संवत 2083 के शुभागमन के साथ ही भारतीय नववर्ष का आरंभ हो रहा है। यह हमारा वास्तविक नववर्ष है। इस समय प्रकृति भी नवता का अहसास करा रही है। आज की नई पीढ़ी अंग्रेजी नववर्ष से तो परिचित है, पर भारतीय नव संवत की महिमा से अनजान है। ऐसे में हमारा दायित्व है कि अपने जीवन–मूल्यों एवं परंपरा से जुड़े इस अवसर का अधिकाधिक प्रचार कर नई पीढ़ी को इसके प्रति जागरूक करने का काम करें।

उन्होंने कहा कि संघ का कार्य जोड़ने का है, राष्ट्र–निर्माण का है। इसीलिए 100 वर्षों की यात्रा में उसका इतना विस्तार हो सका है। उन्होंने संघ शताब्दी वर्ष में चलाए जा रहे पंच प्रण अभियान की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि विकसित भारत के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। कुटुंब–प्रबोधन, सामाजिक–समरसता, पर्यावरण–संरक्षण, नागरिक–बोध जैसे कार्यों का संबंध किसी जाति–धर्म से नहीं है। समर्थ नागरिक तथा समरस समाज सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए अति आवश्यक हैं। उन्होंने उपस्थित हर एक व्यक्ति से कम से कम एक क्षेत्र चुनकर उसमें कार्य करने का आह्वान किया।

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे ने कहा कि भले ही हमारा नववर्ष अंग्रेजी नववर्ष की भाँति धूम–धड़ाके से नहीं आता है, पर उसके मनाने का हमारा एक सनातनी तरीका है, जिसके अनुसार हम पूरी आस्था, भक्ति, समर्पण और उल्लास के साथ नौ दिन तक इसे साधना–पर्व के रूप में मनाते हैं।आज भले ही अपने नववर्ष के प्रति हमारे समाज के बहुत लोग अनजान हों, पर इसे मनाते सभी हैं।

इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉक्टर सच्चिदानंद चौबे ने कहा कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा हमारा वास्तविक नववर्ष है। भारत–भर में अधिकांशतः इसके कहीं थोड़े पहले, कहीं कुछ बाद में अलग–अलग नामों से नववर्ष मनाए जाने की परंपरा है। हमें अपने नववर्ष का उसी उत्साह के साथ स्वागत करना चाहिए, जिस उत्साह के साथ एक जनवरी को पड़ने वाले ग्रेगॅरियन नववर्ष का करते हैं। बी.बी.ए. विभाग के अध्यक्ष डॉ. अखिलेश दीक्षित ने कहा कि शिक्षक की शक्ति उसके विद्यार्थी हैं। उनके माध्यम से समाज तक व्यापक संदेश पहुंचाया जा सकता है। अतः विद्यार्थियों को ऐसी बातों के प्रति जागरूक करना प्रकारांतर से समाज को ही जागरूक करना है।

कार्यक्रम में डॉ. नीरज सिंह, डॉ. हृदयकान्त पाण्डेय, डॉ. कपिल गुप्ता तथा डॉ. यशवंत यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉक्टर मयंक कुशवाहा ने प्रेरणागीत प्रस्तुत किया और प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने नव संवत्सर से संबंधित अपना स्वरचित गीत 'शुभ चैत्र प्रतिपदा का हम कर रहे हैं स्वागत, इस परम पावन दिन से है आ रहा नव संवत' सुनाया। इस अवसर पर डॉ. राजेश सिंह, देवमंगलम, अंकेश वर्मा, शिवकुमार गुप्ता, मनीष गुप्ता, अतुल उपाध्याय आदि भी उपस्थित रहे। संचालन डॉ. जयसिंह यादव ने किया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के डॉ. लक्ष्मण सिंह की बड़ी उपलब्धि

चार जिलों की वायु गुणवत्ता जांच की कमान अब रसायन विज्ञान विभाग के हाथ में

16 मार्च, 2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के नाम एक और गौरवपूर्ण उपलब्धि जुड़ गई है। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (UPPCB) ने विश्वविद्यालय के रसायन वैज्ञानिकों को सिद्धार्थनगर, बस्ती, संत कबीरनगर, और बलरामपुर जिले की वायु गुणवत्ता की निगरानी का अहम जिम्मा सौंपा है।इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व विभाग के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण सिंह (मुख्य अन्वेषक) और डॉ. आजाद कुमार (सह–प्रधान अन्वेषक) करेंगे। प्रत्येक वर्ष ₹33.84 लाख के प्रारंभिक बजट वाले इस प्रोजेक्ट के तहत 8 केंद्रों पर PM10, PM2.5, सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड जैसी हानिकारक गैसों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने विभाग की वैज्ञानिक क्षमता पर भरोसा जताते हुए पूर्वांचल के चार महत्वपूर्ण जिलों–बस्ती (3 स्थानों), संत कबीरनगर (3 स्थानों), सिद्धार्थनगर (1 स्थान) और बलरामपुर (1स्थान) की वायु गुणवत्ता अनुश्रवण (Air Quality Monitoring) का विशाल प्रोजेक्ट विभाग को सौंप दिया है, जो सीधे तौर पर विभाग की तकनीकी विशेषज्ञता और शोध क्षमता की जीत को दर्शाता है।

इस बड़ी उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी और कहा कि यह हमारे विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने हमारे वैज्ञानिकों की तकनीकी दक्षता पर विश्वास जताया है, साथ ही उन्होंने जोर दिया कि रसायन विज्ञान विभाग द्वारा किया जाने वाला यह शोध न केवल शैक्षणिक, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय सुरक्षा की दृष्टि से भी मील का पत्थर साबित होगा। हमारे वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया सटीक डेटा भविष्य में प्रदूषण नियंत्रण की नीतियों के लिए मुख्य आधार स्तंभ बनेगा।

इसी क्रम में विज्ञान संकाय की डीन प्रो. प्रकृति राय ने रसायन विज्ञान विभाग के शिक्षकों को बधाई देते हुए इसे संकाय की शोधपरक संस्कृति की बड़ी सफलता बताया। प्रोजेक्ट का मुख्य नेतृत्व कर रहे विभागाध्यक्ष एवं मुख्य अन्वेषक डॉ. लक्ष्मण सिंह ने

इस जिम्मेदारी को विभाग के लिए गौरवपूर्ण बताते हुए कहा कि यह प्रोजेक्ट पूर्वांचल के इन जिलों की वायु गुणवत्ता की वास्तविक वैज्ञानिक तस्वीर पेश करेगा और नीति–निर्माण में सहायक होगा। इस परियोजना के अंतर्गत साइंटिफिक असिस्टेंट (04), लैब असिस्टेंट (04) और फील्ड असिस्टेंट (08) वायु गुणवत्ता से जुड़े आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण करेंगे। वहीं सह–प्रधान अन्वेषक डॉ. आजाद कुमार ने तकनीकी बारीकियों पर जोर देते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य उच्च गुणवत्ता वाले वैज्ञानिक डेटा के माध्यम से प्रदूषण नियंत्रण में योगदान देना है और यह हमारे शोधार्थियों के लिए भी फील्ड वर्क एवं डेटा एनालिसिस सीखने का एक बेहतरीन अवसर है।

उल्लेखनीय है कि रसायन विज्ञान विभाग द्वारा संचालित इस प्रोजेक्ट के पहले वर्ष के लिए 33.84 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है और यह प्रोजेक्ट आगामी वर्षों तक निरंतर इसी तरह चलता रहेगा, जिसके तहत कुल 8 केंद्रों पर PM10, PM2.5,SO2 और NO2 का सप्ताह में दो दिन 24 घंटे लगातार अनुश्रवण किया जाएगा, जिसके आँकड़े सीधे केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पोर्टल पर अपलोड होंगे। धान के भूसे, कृषि अवशेषों का दहन और दीपावली के समय में हैवी मेटल्स का हवा में विशेष विश्लेषण भी किया जाएगा, जो विभाग को एक सशक्त 'साइंटिफिक हब' के रूप में स्थापित करेगा।

'आर्ट ऑफ सिंधु–सरस्वती सिविलाइजेशन : न्यू डिस्कवरीज' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान एवं 'कैंपस कनेक्ट' पत्रिका का विमोचन संपन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के कला संकाय में 'आर्ट ऑफ सिंधु–सरस्वती सिविलाइजेशन : न्यू डिस्कवरीज' विषय पर एक महत्वपूर्ण विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रतिष्ठित पुरातत्वविद्, संग्रहालयविद् एवं कला इतिहासकार तथा भारत कला भवन संग्रहालय के पूर्व निदेशक डॉ. डी. पी. शर्मा ने सिंधु–सरस्वती सभ्यता से संबंधित नवीन खोजों के ऐतिहासिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खनन के संकेत जॉन मार्शल के काल से पूर्व भी प्राप्त होते हैं तथा इसे सरस्वती नदी सभ्यता के रूप में भी जाना जाता रहा। उन्होंने बताया कि लगभग 4500 ईसा पूर्व से 3000 ईसा पूर्व के मध्य इस सभ्यता का व्यापक विकास हुआ और यह अत्यंत विशाल भू–भाग में विस्तृत थी। लगभग 250 स्थलों पर हुए उत्खननों से प्राप्त रत्न, आभूषण, मुद्राएँ, कलाकृतियाँ एवं अन्य पुरावशेष इस सभ्यता की उन्नत वैज्ञानिक एवं कलात्मक दृष्टि को प्रमाणित करते हैं।

उन्होंने कहा कि उत्खनन में प्राप्त पहियों, लिपि–सम्बन्धी प्रमाणों, स्थापत्य अवशेषों तथा मुद्रण जैसी तकनीकों के संकेत यह दर्शाते हैं कि प्राचीन भारतीय सभ्यता अत्यंत विकसित थी। उन्होंने यह भी कहा कि नवीन शोध–खोजों को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में समुचित स्थान दिया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को अद्यतन जानकारी प्राप्त हो तथा उनके अध्ययन एवं नवाचार को गति मिले।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि सिंधु–सरस्वती सभ्यता पर हो रहे नवीन अनुसंधान भारत की ज्ञान परंपरा को समकालीन समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इस प्रकार के व्याख्यान विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को ऐतिहासिक बोध के साथ–साथ शोध एवं बौद्धिक विमर्श की नई दिशाएँ प्रदान करते हैं।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की मासिक पत्रिका 'कैंपस कनेक्ट' के दो अंकों (जनवरी–फरवरी) का वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर विमोचन किया गया। पत्रिका के प्रधान संपादक एवं पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा ने बताया कि यह पत्रिका विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का समग्र दस्तावेज है। इसमें विद्यार्थियों की रचनाएँ, कविताएँ, लेख आदि प्रकाशित कर उन्हें लेखन एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान किया जाता है।

कार्यक्रम में मंचासीन अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय ने कहा कि नवाचार एवं अन्वेषण की भावना उच्च शिक्षा को सार्थक बनाती है तथा शोधपरक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाता है। वहीं अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ ने कहा कि अंतःविषयक अध्ययन एवं अकादमिक संवाद ज्ञान के नए आयामों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने प्रभावी रूप से किया। इस अवसर पर प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, डॉ. रविकांत शुक्ला, डॉ.शरदेंदु कुमार त्रिपाठी, डॉ. यशवंत यादव, डॉ. जयसिंह यादव, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ. अरविंद रावत, डॉ. अमित साहनी, डॉ. बाल गंगाधर, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. हृदाकांत पाण्डेय, डॉ. रेनू त्रिपाठी सहित अनेक शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

डॉ. किरन रिसर्च एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के वनस्पति विज्ञान विभाग में सहायक आचार्य डॉ. किरन गुप्ता को महर्षि स्कूल ऑफ साइंसेज और महर्षि स्कूल ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज, महर्षि स्कूल ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, लखनऊ द्वारा 12–14 मार्च, 2026 को

आयोजित विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवाचार पर तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ISTSD 3.0–2026) में रिसर्च एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इस सम्मेलन में अन्य सहयोगी संस्थान श्रीलंका का सबरागमुवा विश्वविद्यालय, उज्बेकिस्तान का अंतर्राष्ट्रीय

कृषि–खाद्य विकास केंद्र और नाइजीरिया का ग्लोरियस विजन विश्वविद्यालय हैं।

डॉ. किरन गुप्ता भारी धातुओं, मेटालॉइड्स और अन्य रासायनिक प्रदूषकों पर काम कर रही हैं। वे सिद्धार्थनगर सहित उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में आर्सेनिक से प्रभावित मिट्टी और जल की गुणवत्ता पर काम कर रही हैं। वे आर्सेनिक के उन्मूलन के लिए पर्यावरण के अनुकूल हरित प्रौद्योगिकी पर काम कर रही हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशकों में कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। हाल ही में उनके द्वारा संपादित पुस्तक 'जेनोबायोटिक्स इन एनवायरनमेंट : डिटेक्शन, इम्पैक्ट्स एंड इट्स रेमेडिएशन' प्रकाशित हुई है। अंतरराष्ट्रीय सीआरसी, टेलर एंड फ्रांसिस के माध्यम से प्रकाशित यह पुस्तक जेनोबायोटिक्स के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का सप्त दिवसीय (दिन–रात) शिविर सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के परिसर में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की तीन इकाइयों– भारतरत्न अटलबिहारी वाजपेई इकाई, महारानी अहिल्याबाई होलकर इकाई, एवं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस इकाई के द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित सप्त दिवसीय विशेष शिविर माननीय कुलपति प्रो कविता शाह के आशीर्वाद से प्रारम्भ हुआ। सप्त दिवसीय विशेष शिविर के प्रथम दिवस का प्रारम्भ शिविर के उद्घाटन–सत्र के साथ आज दिनांक 07.03.2026 को प्रो नीता यादव, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया गया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. नीता यादव ने कहा कि स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं को बेहतर चरित्र–निर्माण के साथ साथ एक सभ्य समाज के भी निर्माण करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के प्रथम बौद्धिक सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मनीषा बाजपेई, सहायक आचार्य, भौतिक विज्ञान विभाग ने 'सभ्य समाज के निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका' विषय पर बोलते हुए कहा कि मानव जीवन का बेहतर निर्माण आदर्शों एवं मानव मूल्यों को अपनाने से होता है। प्रथम दिवस के द्वितीय बौद्धिक सत्र में वक्ता के रूप में डॉ हरेंद्र कुमार शर्मा ने 'मानव–मूल्य निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ यशवन्त यादव द्वारा, स्वागत डॉ रक्षा द्वारा एवं आभार–ज्ञापन डॉ सरिता सिंह द्वारा किया गया।

दिनांक 08.03.2026 को शिविर के दूसरे दिन प्रथम एवं द्वितीय बौद्धिक सत्र प्रो. सुनीता त्रिपाठी अध्यक्ष, लोक प्रशासन विभाग अध्यक्षता में शिविर–स्थल विजय सुधा कॉलेज ऑफ फॉर्मेसी (ग्राम संग्रामपुर) में संपन्न हुआ। इस सत्र का विषय 'महिला सशक्तीकरण में लोक संस्कृति की भूमिका' रहा। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं को बेहतर चरित्र–निर्माण के साथ–साथ एक सभ्य नागरिक बनने एवं बनाने में मातृशक्ति की विशेष भूमिका होती है। समाज को एक नई दिशा व दशा प्रदान करने में सहनशीलता एवं धैर्य की विशेष आवश्यकता होती है जो महिलाओं में अधिक होता है। मानव–मूल्यों को समाज में बेहतर तरीके से स्थापित करने में लोक–संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और लोक–संस्कृति के रचाव–बचाव में महिलाओं की भूमिका विशेष है।

कार्यक्रम के प्रथम बौद्धिक सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ जयसिंह यादव, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग ने उक्त विषय पर अपने विचार व्यक्त किये, जबकि प्रथम दिवस के द्वितीय बौद्धिक सत्र में डॉ. बाल गंगाधर ने 'अस्मिता महिला दिवस से राष्ट्र–निर्माण : राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान' विषय पर प्रकाश डाला। इस बौद्धिक सत्र में द्वितीय वक्ता के रूप में डॉ कुसुम यादव ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। सांस्कृतिक संध्या में स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं ने महिला दिवस से जुड़े विषयों एवं लोक–संस्कृति तथा सामाजिक मूल्यों से जुड़े मुद्दों पर गीत–संगीत की प्रस्तुति एवं अन्य विधाओं से उपस्थित सभी लोगों को आनंदित होने का अवसर प्रदान किया।

तीसरे दिन (9 मार्च, 2026) जनजागरण एवं स्वच्छता अभियान के साथ बौद्धिक सत्र का आयोजन किया गया। स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं ने शिविर–स्थल की स्वच्छता के पश्चात ग्राम संग्रामपुर में जनसंपर्क कर स्वच्छता, सेवा–भाव एवं जनसहभागिता के प्रति ग्रामीणों को जागरूक किया। बौद्धिक सत्र में अध्यक्षता करते हुए प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं के चरित्र निर्माण, सामाजिक संवेदनशीलता और मानव मूल्यों के विकास का सशक्त माध्यम है।

विशेष शिविर के चौथे दिन सायं काल कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने शिविर–स्थल पर पहुँचकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन किया। उन्होंने उपस्थित वॉलिंटियर्स को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर के मूल उद्देश्यों एवं शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक दायित्व बोध के संबंध में बताया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करने का प्रकल्प नहीं है अपितु इसके माध्यम से विद्यार्थी अपने स्वयं के लिए और अपने साथी विद्यार्थियों के लिए जीवन–दृष्टि के रूप में आगे बढ़ा सकते हैं। समाज–सेवा एवं सामाजिक दायित्व की भावना विकसित कर समाज की मूल भावना का विकास कर सकते हैं। साथ ही वर्तमान समय में राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में रोजगार के भी अनेक अवसर प्राप्त करने की संभावना है। इस दृष्टि से भी राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका और उपादेयता महत्वपूर्ण है।

समाज को सकारात्मक दिशा देने में धैर्य, सहनशीलता और सेवा–भाव जैसे गुणों का विशेष महत्व है, जिन्हें एनएसएस के माध्यम से विकसित किया जाता है। मुख्य वक्ता डॉ. अरविन्द कुमार रावत के अलावा डॉ. विशाल गुप्ता तथा डॉ. विमल चन्द्र वर्मा ने भी राष्ट्र–निर्माण, सामाजिक सौहार्द एवं स्वच्छता के महत्व पर कार्यक्रम में विचार व्यक्त किए। संध्या सत्र में स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं द्वारा महिला दिवस, लोक–संस्कृति और सामाजिक मूल्यों पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं।

विशेष शिविर के चौथे दिन 10 मार्च, 2026 को जनजागरण, स्वच्छता अभियान एवं बौद्धिक सत्र का आयोजन किया गया। इस दिन प्रथम बौद्धिक सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. आशुतोष कुमार वर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं में चरित्र निर्माण, सामाजिक संवेदनशीलता तथा पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित करने का प्रभावी माध्यम है। मुख्य वक्ता डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने मानव मूल्यों, लोक संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण के संवर्धन में एनएसएस की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। द्वितीय बौद्धिक सत्र में डॉ. सच्चिदानंद चौबे, डॉ. रविकांत शुक्ला एवं डॉ. अरविन्द कुमार रावत ने "सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रसार में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। संध्या–सत्र में स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं ने स्वागत गीत, पर्यावरण संरक्षण तथा लोक संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम के

दौरान डॉ. मनीषा वाजपेई, डॉ. विनीता रावत, डॉ. किरण गुप्ता, डॉ. मुन्नू खान, डॉ. ममता, डॉ. सुजाता यादव, श्री आनंद, श्री सौरभ कुमार प्रजापति, श्री अनुपम सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

11 मार्च, 2026 को पाँचवें दिन प्रथम बौद्धिक सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो हरीशकुमार शर्मा (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग एवं पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय एवं छात्र–कल्याण) ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना में सेवा शब्द जुड़ा है, जो इसके उद्देश्य तथा कार्य की प्रकृति को स्पष्ट करता है। सेवा भावना का विकास अगर हर मनुष्य के भीतर हो जाये तो समाज एवं राष्ट्र की बहुत सी समस्याएं हल हो सकती हैं। इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मनीष कुमार शर्मा (सहायक आचार्य, एम बी ए विभाग) ने अपने विचार व्यक्त किये।

बौद्धिक सत्र कार्यक्रम में डॉ. अखिलेश दीक्षित तथा डॉ. अविनाश प्रताप सिंह एवं डॉ नीरज कुमार सिंह ने 'पौध संरक्षण, जल संरक्षण, एवं शैक्षिक सामाजिक, आर्थिक स्थिति के प्रचार–प्रसार में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान' विषय पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सहयोग करने तथा प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएं प्रदान करने के लिए शिविर स्थल पर डॉ. सच्चिदानंद चौबे, डॉ. रविकांत शुक्ला, डॉ. अरविन्द कुमार रावत, डॉ. हृदयकांत पाण्डेय, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. अमरजीत यादव, डॉ. आशीष श्रीवास्तव की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही, डॉ. राजेश कुमार सिंह, डॉ. देव प्रकाश पाण्डेय, श्री आनंद, श्री रविशंकर, श्री सौरभ कुमार प्रजापति, श्री अनुपम, श्री शक्तिधर त्रिपाठी तथा अन्य लोग भी बीच–बीच में उपस्थित रहे।

छठे दिन 12 मार्च 2026 को स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं ने सुबह प्रार्थना सभा के उपरान्त शिविर स्थल की साफ–सफाई एवं सौंदर्यकरण के पश्चात ग्राम संग्रामपुर में जनसंपर्क कर स्वच्छता, वृक्षारोपण, प्रदूषण, सेवा–भाव एवं शासन–प्रशासन की सहकारी योजनाओं, यथा– जल–संरक्षण, हर घर नल, हर घर जल, आयुष्मान योजना, जन धन योजना व जनसहभागिता के प्रति ग्रामीणों को जागरूक किया। प्रथम बौद्धिक सत्र में अध्यक्षता करते हुए प्रो सुनील कुमार श्रीवास्तव (समन्वयक, अनुसन्धान एवं विकास) ने कहा कि जल संरक्षण के साथ साथ समाज को शैक्षिक, आर्थिक संवर्धन में सकारात्मक दृष्टि देने में राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष महत्व है। इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. जितेन्द्र कुमार सिंह (अध्यक्ष–गणित विभाग) ने तथा बौद्धिक सत्र कार्यक्रम में प्रो. कौशलेंद्र चतुर्वेदी, डॉ. बाल गंगाधर, डॉ दीपक जायसवाल, डॉ. अब्दुल हफीज, डॉ. शिवम शुक्ला एवं डॉ अशोक कुमार भारतीय (प्राचार्य, पी. एस. एम. पी. जी. कॉलेज, मथुरा नगर, फरेंदा, महाराजगंज) ने भी जल–संरक्षण, प्रदूषण–समस्या एवं शैक्षिक, आर्थिक संवर्धन की स्थिति के प्रसार–प्रचार में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान विषय पर विचार व्यक्त किए।

संध्याकालीन सत्र में स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं द्वारा पौध–संरक्षण, जल–संरक्षण, एवं प्रदूषण–समस्या, दहेज–प्रथा तथा सामाजिक–आर्थिक मूल्यों से संबंधित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो दीपक बाबू मिश्रा का आशीर्वाद भी स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के बेहतर तरीके से संचालन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रदान करने के लिये श्री रविशंकर, श्री सौरभ कुमार प्रजापति, श्री अनुपम, श्री अंकित सिंह, एवं अन्य लोग उपस्थित रहे। सायंकाल को शिविर–स्थल पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के तृतीय, एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की भी शुभकामनाएं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक स्वयंसेविकाओं को प्राप्त हुईं।

इस प्रकार सात दिनों तक चले इस शिविर का समापन 13 मार्च, 2026 को हुआ। नित्य की भाँति सर्वप्रथम स्वयंसेवक–स्वयंसेविकाओं ने सुबह प्रार्थना–सभा के उपरान्त शिविर–स्थल की स्वच्छता एवं सौंदर्यकरण करके ग्राम संग्रामपुर में जनसंपर्क कर स्वच्छता, एवं जनसहभागिता के प्रति ग्रामीणों को जागरूक किया।

समापन समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की आई क्यू ए सी के समन्वयक, वाणिज्य संकाय अधिष्ठाता तथा प्रबन्धन–अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सौरभ ने कहा कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में सकारात्मक दृष्टि से योगदान प्रदान करने में राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष महत्व हैं। एनएसएस के माध्यम से नई सोच विकसित करने एवं मानव जीवन में सकारात्मकता लाने का प्रयास किया जाता है। इस सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ कहकशां खान (सहायक आचार्य, एम बी ए विभाग) ने अपने प्रेरणादाई विचार व्यक्त किये। लोक प्रशासन विभाग में सहायक आचार्य डॉ. अरविन्द कुमार रावत ने भी प्रतिभागियों को सम्बोधित किया।

समापन–सत्र सेजल, अदिति, अंजलि, प्रगति, आराधना, ज्योति बाला, कयूम, सुशीला, हर्षिता, ईशा आदि प्रतिभागियों के द्वारा स्वागत–गीत, शैक्षिक गीत, सामाजिक–आर्थिक मूल्यों आदि से संबंधित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। समापन कार्यक्रम में प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएं प्रदान करने हेतु श्री रविशंकर, श्री सौरभ कुमार प्रजापति, श्री अनुपम, श्री अंकित सिंह, डॉ. पंकज एवं अन्य लोग उपस्थित रहे। सप्तम दिवस को आयोजित समापन समारोह में शिविर–स्थल पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के अनेक तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. यशवन्त यादव के निर्देशन में हुआ। स्वागत एवं आभार डॉ. रक्षा तथा डॉ सरिता सिंह द्वारा व्यक्त किया गयाा

दही खिलाना, दही निकालना

(लोककथा)

एक तीतर और सियार में कैसे ही मित्रता हो गयी। एक दिन दोनों कहीं जा रहे थे। तीतर ने थोड़ी दूरी पर एक महिला को देखा, जो दही बेचने को निकली थी, पर इस समय थकान के मारे बैठकर सुस्ता रही थी। बगल में उसके दही की मटकी रखी हुई थी। तीतर ने सियार से पूछा– ''दही खाओगे?''

सियार बोला– ''हैंऽ..? कहाँ मिल जायेगा?''

तीतर ने कहा– ''मिल जायेगा। तुम हाँ तो करो।''

सियार बोला– ''नेकी और पूछ–पूछ? इससे अच्छा क्या होगा? खिलवाओ।

सियार ने कहा, ''तो ठीक है। मैं व्यवस्था करता हूँ। थोड़ी मेहनत तुम्हें भी करनी पड़ेगी। वह जो थोड़ी दूर पर औरत बैठी हुई देख रहे हो न? उसे मैं दूर ले जाऊँगा। फिर तुम छककर उसकी मटकी में से दही खाकर खिसक जाना।''

तीतर उड़ा और जाकर उस महिला के आगे थोड़ी दूरी बनाकर बैठ गया। वह लुभा गयी और उसे पकड़ने को आगे बढ़ी। तीतर थोड़ा आगे बढ़ गया। महिला भी आगे बढ़ी। तीतर फिर आगे बढ़ गया। वह मात्र इतनी दूरी बनाये रहा कि महिला को यह लगता रहे कि वह तीतर को पकड़ सकती है। इस तरह वह महिला को काफी दूर ले गया।

उधर सियार मौका देखकर आया और जी भरकर दही खाकर निकल गया। जब तीतर ने देखा कि सियार का काम हो गया तो वह उड़ा और दूर निकल गया। महिला हाथ मलती हुई वापस आयीं। वापस आकर तो वह हाय–हाय करती हुई रोने ही लगी कि तीतर तो हाथ आया नहीं, उल्टे दही हाथ से चला गया।

अब तीतर सियार के पास पहुँचा जो पेट भरकर दही खाने के पश्चात झाड़ी में आराम कर रहा था। तीतर ने कहा– ''कहो कैसी रही? मैंने खिलाया तुम्हें दही!''

सियार बोला– ''तुमने क्या खिलाया? वह तो मैंने स्वयं अपनी चतुराई से खा लिया।''

तीतर को बड़ा बुरा लगा। उसने कहा– ''अच्छा तो कोई बात नहीं। हम अगर खिला सकते हैं तो निकलवाना भी जानते हैं।''

अबकी बार वह फिर उड़ा और कुत्तों को अपने पीछे लगाया और उन्हें वहाँ तक ले आया, जहाँ सियार महोदय आराम फरमा रहे थे। कुत्तों ने सियार को देखते ही तीतर को छोड़, उसे घेरा। सियार भागा। कुत्ते पीछे लगे। सियार आगे–आगे, कुत्ते पीछे–पीछे। सियार को जान बचाना भारी! इतना दौड़ाया कुत्तों ने कि उसका पेट चल गया और सारा दही निकल गया। जैसे–तैसे जान बची।

(प्रस्तुति : हरीशकुमार शर्मा)